रात्रीक्लास ओमशांति 1.10.67

बाप और बच्चों का मिलाप बाप को भी मीठा लगता है, बच्चों को भी मीठा लगता है। किसको जास्ती मीठा लगता है?(बच्चों को) नहीं ,बाप को। अच्छा उनको लगता है। बाबा तो जानते हैं सारे विश्व को हेविन बनाना है। वह तो हैं ही निश्चय बुद्धि। आय कर विश्व को स्वर्ग बनाना ही है। बच्चे भूल जाते हैं इस कारण सर्विस ठीक नहीं चलती। बाप को तो आत्माओं पर लव है। बाकी चाहिए मददगार। मददगारों में ही रोला पड़ता है। स्वर्ग तो बन ही जावेगा ड्रामाप्लैनअनुसार। बाकी बच्चों को हिम्मत कर खुशमिजाज हर्षित बनना है। बच्चे दैवी गुण नहीं धारण कर सकते हैं। बाप को भूल जाते हैं। भूलना न चाहिए। जिससे बेहद का वर्सा मिलता है उनको भूलना न चाहिए। जिससे बेहद का वर्सा मिलता है उनको भूलना न चाहिए। बाबा ने बहुत बार समझाया है याद में कोई तकलीफ नहीं और रोज की मुरली भी जरूर सुननी है। कोई डेट की मुरली तो मिस नहीं की। बहुत बच्चे आते–जाते हें तो बीच की मुरली रह जाती है। ध्यान नहीं देते। कोई समझते हमने तो समझ लिया है। बाप युक्ति बतलाते ही हैं। धारणा कर सर्विस में लग जाओ। मुख्य बात है बाप को याद करने की। तुम जानते हो कि पुरुषोत्तम बनने बाप के पास आते हैं। बाप कितना उंच पढ़ाते हैं तो कितना उल्लास रहना चाहिए। यह (ल.ना.) लेकर परिक्रमा करो। भारत श्रेष्ठाचारी था,अब नहीं है। हम फिर से श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। भारत स्वर्ग था। अब कंगाल कैसे बना है यह कोई नहीं जानते। बाप समझाते हैं सब पुजारी हैं। तमोप्रधान दुनियां में कोई भी पवित्र हो न सके। बाकी सब हैं भक्तिमार्ग के अंधश्रद्धा। भारत अंधश्रद्धा में नामी–ग्रामी है। कुछ भी नहीं समझते। अभी तुम समझते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार स्वच्छ बन रहे हैं। भारत को महादानी कहा जाता है। बाप अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। वह तुम देते रहो। एक मत हो सर्विस को बढ़ाते रहो। तुम बच्चों में यह ज्ञान है। दुनियां तो जैसे अंधी है। ऐसे नहीं कहेंगे कि नवधा भक्ति से सा. हुआ। नहीं। हिम्मत की तो सा. हुआ। तुम .....हिम्मत से पुरुषार्थ करेंगे तो बाप कहते हैं मुझे याद करेंगे तो ऐसा बनेंगे। पुरुषार्थ से ऐसा बनना है। आशीर्वाद ,कृपा आदि यह अक्षर भक्तिमार्ग के हैं। बाप कहते हैं तुम सब चिल्डेंस हो। कहते हैं तुमको इतने पैसे दिये तुम सब खलास कर दिया। बेहद का बाप सब कहते हैं तुम डबल सिरताज थे फिर क्या हुआ?बाप ने समझाया है वंडर भी खाते हो। डबल सिरताज बन हम नीचे उतरते2 क्या हो गए। इसको कहा जाता है उत्थान और पतन। कल्प पहले जो समझा था वह ही नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझेंगे। 84जन्म सब थोड़े ही लेंगे। कोई होशियार बैठ एवरेज हिसाब निकाल सकते हैं ;परंतु यह माथा मारना फाल्तू है। इससे तो बाप को याद करने में माथा मारना चाहिए। पेट भरेगा याद से। खुदाईखिजमतगार तो तुम बच्चे हो। बाप सबको लिखते हैं याद की यात्रा से बेरा पार। तुम इस पार से उस पार चले जावेंगे। जितना याद करते हैं घड़ी2 नजदीक आते जाते हैं। विलायत से लौटते हैं तो याद आता है हम जा रहे हैं। तुम भी दिन प्रतिदिन नजदीक आते जाते हो। यह यात्रा तुम अभी करते हो। जाने की यात्रा है। यात्रा से विकर्म विनाश होते हैं। पावन होकर जाते हैं। फिर 84जन्मों के बाद फिर ऐसे हो जाते हैं। यह रुहानी यात्रा है। गीत भी है थक मत जाना हे रात के राही। रात को तो यात्रा करते नहीं हैं। फिर यह गीत क्यों बना है। बाप कहते हैं तुम अथक हो पुरुषार्थ करते रहो। जितना पुरुषार्थ करेंगे कल्याण होगा। बच्चों को अब समझ में आया है। बाप का भी समझ इमर्ज हुई है। संकल्प उठता तब है जब ड्रामा में पार्ट है। बाप कहते हूबहू कल्प पहले मुआफिक समझाता रहता हूं। यह अति सहज भी है। पुरुषार्थ करते2 माया की जीत भी हो जाती है। माया ग्राह हप कर लेती है। हप किया है ,हप करेगी। न पढ़े हुए हों तो कोई हर्जा नहीं है। यह तो समझने की बात है। पापात्माओं को दान देने से पाप लग जाता है। इसलिए बाप सब युक्तियां बतलाते रहते हैं। शिवबाबा को याद कर भोजन खाना है। सब बाप को बतलाय दो तो रेसपांसिबिलिटी से छूट जावेंगे। बाप तो डायरैक्शन देते हैं। यह ही है श्रीमत। बच्चों को अतिइन्द्रिय खुशी होनी चाहिए। हम भगवान के बच्चे हैं। भगवान हमको पढ़ाते हैं। याद जरूर करना पड़े तब विकर्म विनाश हों। बहुत खुशी होगी। बोलो बाप को याद करेंगे तो पावन बन विश्व के मालिक बन जावेंगे। याद से खुशी बहुत होगी। ओम।